



HarghaPanditji

॥ रमा एकादशी ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

---

# FULL DISCLAIMER

---

*This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.*

*This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.*

*Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.*

*Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.*

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR"

# ॥ रमा एकादशी ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

## रमा एकादशी का परिचय

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रमा एकादशी कहा जाता है। यह एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु तथा माता लक्ष्मी (रमा) को अत्यंत प्रिय है। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, दरिद्रता दूर होती है, सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है। इस व्रत का माहात्म्य भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बताया था।

## कथा प्रारंभ

प्राचीन समय में मुचुकुन्द नाम के एक महान धर्मात्मा और सत्यनिष्ठ राजा राज्य करते थे। वे भगवान विष्णु के परम भक्त थे। उनकी एक अत्यंत सुंदर, सद्गुणी और पतिव्रता पुत्री थी, जिसका नाम चन्द्रभागा था। राजा ने अपनी पुत्री का विवाह शोभन नामक एक राजकुमार से किया।

राजा मुचुकुन्द के राज्य में एकादशी व्रत का अत्यंत कठोर नियम था। एकादशी के दिन राजा से लेकर सामान्य प्रजा, यहाँ तक कि पशुओं तक को अन्न नहीं दिया जाता था। सभी श्रद्धापूर्वक भगवान विष्णु का स्मरण करते हुए व्रत रखते थे।

एक बार कार्तिक कृष्ण पक्ष की रमा एकादशी के दिन राजकुमार शोभन अपनी पत्नी चन्द्रभागा के साथ अपने ससुराल में थे। शोभन का शरीर दुर्बल था और वे उपवास करने में सक्षम नहीं थे। उन्होंने चन्द्रभागा से

कहा—

"हे प्रिये! मेरा शरीर इतना दुर्बल है कि मैं कठोर उपवास नहीं कर सकता।

अब मुझे क्या करना चाहिए?"

चन्द्रभागा ने उत्तर दिया—

"हे स्वामी! मेरे पिता के राज्य में एकादशी के दिन कोई भी अन्न ग्रहण नहीं करता। यदि आप चाहें तो अपने राज्य लौट सकते हैं, अन्यथा यहाँ

आपको भी व्रत का पालन करना होगा।"

धर्म की मर्यादा का पालन करते हुए राजकुमार शोभन ने रमा एकादशी का व्रत रखा। किंतु दुर्बल शरीर होने के कारण वे व्रत की कठोरता सहन न कर सके और उसी रात्रि उनके प्राण निकल गए।

### भगवान की कृपा

रमा एकादशी के व्रत के प्रभाव से शोभन को मन्दराचल पर्वत पर दिव्य और अत्यंत वैभवशाली नगर प्राप्त हुआ। वहाँ वे देवताओं के समान सुखपूर्वक रहने लगे, परंतु उनका यह वैभव स्थायी नहीं था क्योंकि उन्होंने व्रत पूर्ण श्रद्धा और सामर्थ्य के साथ नहीं किया था।

कुछ समय बाद सोमशर्मा नामक एक ब्राह्मण उस दिव्य नगर में पहुँचे। उन्होंने शोभन को पहचान लिया। शोभन ने उनसे निवेदन किया कि वे जाकर चन्द्रभागा को उनके दिव्य राज्य का समाचार दें।

ब्राह्मण ने लौटकर सारी बात चन्द्रभागा को बताई। यह सुनकर चन्द्रभागा अत्यंत प्रसन्न हुई। उसने अपने जीवन भर किए गए एकादशी व्रतों का संचित पुण्य भगवान विष्णु को समर्पित किया और उसी पुण्य के प्रभाव से दिव्य शरीर धारण कर अपने पति शोभन के पास पहुँच गई।

चन्द्रभागा के पुण्य से शोभन का दिव्य राज्य स्थायी हो गया और दोनों भगवान विष्णु की कृपा से दिव्य सुखों का उपभोग करने लगे।

व्रत का फल

रमा एकादशी का व्रत करने से—

भगवान श्रीहरि विष्णु और माता लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

समस्त पापों का नाश होता है।

धन, वैभव और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

दरिद्रता और कष्ट दूर होते हैं।

परिवार में सुख, शांति और सौभाग्य बना रहता है।

अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

### कथा का संदेश

रमा एकादशी सिखाती है कि श्रद्धा, नियम और भगवान के प्रति अटूट विश्वास से किया गया व्रत महान फल प्रदान करता है। साथ ही, धर्मपालन और भक्ति से जीवन में सुख, समृद्धि तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है।

### फलश्रुति

जो श्रद्धालु श्रद्धापूर्वक रमा एकादशी का व्रत करता है, इसकी कथा का श्रवण या पाठ करता है तथा भगवान श्रीहरि विष्णु और माता लक्ष्मी का स्मरण करता है, उसके सभी पाप नष्ट होते हैं, उसे धन-धान्य, सुख-समृद्धि और अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

॥ इति श्री रमा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥